मिसाइलों-टैंकरों से उड़ाया गुलाल, रंगों से रंगीन हुआ आसमान

गेर में उमड़ा जनसैलाब, हर्षोल्लास से मनाई रंग पंचमी , रही कड़ी सुरक्षा व्यवस्था, प्रशासन और पुलिस रही मुस्तैद

नवभारत न्यूज़

इन्दौर. रंगपंचमी पर्व पर शहर का आसमान रंगों और गुलाल से सराबोर रहा. गेर में टैंकरों पर मिसाइलें लगाकर रंग बरसाया और रंगीन पानी की बौछार की गई. डीजे की धुन और होली गीतों पर हजारों शहरवासी झूमे. हुरियारों की टोलियों ने जमकर रंग उड़ाया और मस्ती की. साथ ही विभिन्न संस्थाओं की अलग-अलग झांकियां चलती रहीं.

रंग पंचमी एक ऐसा त्यौहार है जिस पर लोग एक दूसरे को जाने बिना बिना ही रंग देते हैं और कोई बुरा भी नहीं मानता. रंग पंचमी पर राजवाड़ा क्षेत्र में सुबह से ही उत्साह, उमंग और रंगों का माहौल देखने को मिला. सुबह विशेष पुलिस अधिकारियों ने पूरे राजवाड़ा क्षेत्र और गैर के मार्ग का पैदल तथा वाहन से भ्रमण किया. इस दौरान उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था, बैरिकेडिंग, भीड़ नियंत्रण और पुलिस बल की तैनाती का बारीकी से निरीक्षण किया. वहीं सुबह 10 बजे से ही हुरियारों की टोलियां राजवाड़ा क्षेत्र में पहुंचने लगी थीं. शहर के अलग-अलग हिस्सों से आए युवाओं, परिवारों और पर्यटकों के कारण राजवाड़ा और आसपास के मार्गों पर धीरे-धीरे भीड़ बढ़ने लगी थी. भीड़ को नियंत्रित करने और किसी भी संभावित दुर्घटना से बचने के लिए नगर निगम की टीम भी डिवाइडरों और प्रमुख स्थानों पर मौजूद रही. सुबह से ही जिला प्रशासन के अधिकारी मौके पर तैनात हो गए थे. इस दौरान डीएम शिवम वर्मा, एडीएम रोशन राय, एसडीएम निधि सहित सभी तहसीलदार और प्रशासनिक अधिकारी व्यवस्था पर नजर बनाए हुए थे. करीब 10.30 बजे इंदौर कलेक्टर राजवाड़ा पहुंचे, जहां उन्होंने पूरे गैर मार्ग का निरीक्षण किया और नगर निगम तथा पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर आपसी समन्वय को और मजबूत करने के निर्देश दिए.

टैंकर पर बनी मिसाइलों से उड़ाया रंग : टोरी कॉर्नर की रंग पंचमी गैर ने अपना 77 वर्ष पूर्ण किया. गैर 10.15 बजे प्रारंभ हुई. गैर का ऐतिहासिक स्वागत किया गया गैर में तीन टैंकर पानी से कई मिसाइलों से लोगों का स्वागत किया गया. टैंकर पर बनी मिसाइल से कोई अछूता नहीं रहा वहीं पर बोरिंग मशीनों से गुलाल से कोई नहीं बचा, डीजे की धुन पर लोगों ने खूब डांस किया, गैर में शामिल सभी लोगों का गैर संयोजक शेखर गिरि एवं शिव गुप्ता ने धन्यवाद दिया. गैर के सफलता के लिए कपिल गुप्ता हर्षवर्धन गिरी रॉबिन गिरि प्रशांत गिरी हिमांशु गिरी ने स्वागत किया.

हिंद रक्षक समिति की फाग यात्रा

बरसाना की होली रही आकर्षण

इसके बाद संस्था सृजन कि गैर मोर पंख बनाते हुए रंगों का मोर पंख बनाते हुए आगे बढ़ती हुई लोगों पर रंग गुलाल उड़ाते हुए राजवाड़े की ओर धीरे-धीरे बढ़ी . संगम कॉर्नर से संस्था सृजन के अध्यक्ष कमलेश खंडेलवाल, संयोजक महेश दलोद्रा, गोविंद गोयल और तनुजा खंडेलवाल के नेतृत्व में गेर निकली . इस वर्ष गेर का 76वां वर्ष है . आयोजन में बरसाना की प्रसिद्ध लट्ठमार होली का प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगा .

हाथी की सूंड से रंग छिड़का: नगर निगम की गैर जिसके अंदर सबसे पहले हाथी पर बैठा व्यक्ति लोगों के ऊपर रंग छिड़कते हुए और लोगों का अभिवादन करते हुए निकला वहीं उसके पीछे नगर निगम की गैर में भजन गायक द्वारा भजनों की भी प्रस्तुति दी गई. नगर निगम की गैर में 50 फीट ऊपर तक उड़ने वाले कलर के पटाखे और

ऑपरेशन सिंदूर की तर्ज पर 15 फीट लंबा टैंक मुख्य आकर्षण रहा. गैर में निगम का इस बार तीसरा साल है. निकलने वाली गेर में ऑपरेशन सिंदूर की झलक देखने को मिली. महापौर पुष्यमित्र भार्गव के अनुसार इस बार गेर में सैनिकों के शौर्य और पराक्रम को दिखाया गया. ऑपरेशन सिंदूर की झलक दिखाते हुए टैंक से रंग वर्षा की गई. ऑपरेशन सिंदूर की तर्ज पर निगम के वर्कशॉप में विशेष युद्धक टैंक तैयार किया. 15 फीट लंबा और 7 फीट चौड़ा यह टैंक निगम के कबाड़ से तैयार किया गया था. करीब 10 लोगों की टीम ने इसे बनाया. यह टैंक गेर में लगभग 100 फीट की ऊंचाई तक रंग फेंक रहा था जीससे बील्डिंग पर बैठे लोगो को भी भिगोया.

डीजे की थाप पर थिरके युवा : तीसरे नंबर पर मोरल क्लब की गैर में कोठियों से और टैंकर से युवा लोगों पर रंग उड़ाते नजर आए. डीजे की थाप पर मोरल क्लब में युवा नाचते गाते हुए चल रहे थे मॉरल क्लब समिति की गेर भी पूरे उत्साह के साथ निकली.

नंदी पर विराजित भोलेनाथ रहे आकर्षण : नृसिंह बाजार स्थित बद्रीनारायण मंदिर में पूजन कर हुई फाग यात्रा की शुरुआत 1998 में इसकी शुरुआत पूर्व मंत्री व क्षेत्र के विधायक स्व. लक्ष्मण सिंह गौड़ ने की थी. अब यह परंपरा उनकी पत्नी विधायक मालिनी गौड़ के मार्गदर्शन में उनके पुत्र और हिंद रक्षक संगठन के संयोजक एकलव्य लक्ष्मण सिंह गौड़ निभा रहे हैं. इस साल इस गेर का 28वां वर्ष रहा. 12.30 बजे हिंद रक्षक फाग यात्रा राजवाड़ा पहुंची अपने केसरिया ध्वज के कारण अलग ही पहचान रखती है. वहीं दूसरी ओर सबसे पहले महिलाओं को गैर में शामिल करने के लिए अलग पहचान मिली. हिंद रक्षक स्व लक्ष्मण सिंह गौड़ के द्वारा शुरू की गई फाग यात्रा थी जो अपने वृहद रूप में निकली इंदौर की अयोध्या कहीं जाने वाली सनातन की पहचान रखने वाले विस क्षेत्र 4 से निकली. हिन्द रक्षक गैर का मुख्य आकर्षण नंदी पर विराजित भोलेनाथ रहे.

आदिवासी कलाकारों की प्रस्तुति ने बढ़ाया उत्साह : इस वर्ष रंग पंचमी के आयोजन में सांस्कृतिक रंग भी खास तौर पर देखने को मिले. भूतेश्वर महादेव मंदिर के बैनर तले आदिवासी बहुल क्षेत्रों से आए कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं. रंग, गुलाल और ढोल-मांदर की थाप के बीच कलाकारों ने लोकनृत्य प्रस्तुत कर माहौल को और अधिक उत्साहपूर्ण बना दिया. उनकी प्रस्तुतियों ने राजवाड़ा क्षेत्र में मौजूद हजारों लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया.

मुंबई से इंदौर गैर देखने पहुंचे लोग : रंग पंचमी की प्रसिद्ध गैर को देखने के लिए देश के अलग-अलग हिस्सों से लोग इंदौर पहुंचे. मुंबई से आए संजय कोटस्कने ने बताया कि वे लगभग 30 से 40 वर्षों बाद इंदौर आए हैं, लेकिन यहां का उत्साह, ऊर्जा और रंगों का माहौल आज भी वैसा ही है जैसा उन्होंने वर्षों पहले देखा था. उन्होंने बताया कि मुंबई में भी होली के कई कार्यक्रम होते हैं, लेकिन इंदौर की गैर का अलग ही महत्व है. इसलिए उन्होंने मुंबई के कार्यक्रम को छोड़कर खासतौर पर इंदौर आकर इस आयोजन में शामिल होने का निर्णय लिया. उन्होंने इंदौर की स्वच्छता व्यवस्था और सुरक्षा इंतजामों की भी सराहना करते हुए कहा कि मुंबई में भी लोग इंदौर की सफाई के उदाहरण देते हैं और यहां आकर वास्तव में यह देखने को भी मिलता है.

नगर निगम टीम ने निभाई दोहरी जिम्मेदारी : रंग पंचमी के आयोजन के दौरान नगर निगम की टीम एक ओर जहां पूरे मार्ग पर साफ-सफाई, पानी की व्यवस्था और भीड़ नियंत्रण में प्रशासन का सहयोग करती नजर आई, वहीं दूसरी ओर निगमकर्मी आपस में मिलकर रंगों का त्योहार भी मनाते दिखाई दिए. निगम के कर्मचारी पूरे आयोजन के दौरान लगातार सक्रिय रहे. इस बीच कई जगह निगम कर्मियों ने आपस में गुलाल लगाकर त्योहार की खुशियां भी साझा कीं.

बाहर से आने वाले लोगों के लिए विशेष इंतजाम : रंग पंचमी देखने के लिए इंदौर के अलावा अन्य शहरों और राज्यों से भी बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे. इन लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए राजवाड़ा क्षेत्र में कई घरों की छतों पर टेंट लगाकर विशेष व्यवस्था की गई थी, जहां बाहर से आए लोग आराम से बैठकर गैर का आनंद ले सकें.

45 साल से चंदन-इत्र का तिलक लगाकर दे रहे खुशबूदार रंग

राजवाड़ा चौक पर विमल सैनी पिछले करीब 45 वर्षों से एक अनोखी परंपरा निभा रहे हैं . वे हर साल रंग पंचमी के अवसर पर यहां आने वाले लोगों को चंदन और इत्र से बना तिलक लगाते हैं . उनका रंग लगाने का तरीका भी काफी अनोखा है . वे अपने अंगूठे से गुलाल को इस तरह उछालते हैं कि रंग फूलों की तरह लोगों के चेहरे पर गिरता है . इस तकनीक से रंग किसी की आंखों में नहीं जाता और लोगों के चेहरे पर हल्का, सुगंधित रंग लग जाता है . लोग भी उनकी इस अनोखी परंपरा का आनंद लेते हैं .

मित्रों और बच्चों के साथ आई गैर में

इंदौर की सत्यमित्रा ने भी कहा कि बचपन में उन्हें हमेशा यह सुनने को मिलता था कि गैर में नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वह केवल पुरुषों का आयोजन माना जाता था . लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है . उन्होंने बताया कि इस बार वे अपने परिवार की 15-20 महिलाओं और बच्चों के साथ गैर देखने आई हैं, क्योंकि अब यहां का माहौल सुरक्षित और व्यवस्थित हो गया है .

महिलाओं के लिए सुरक्षित हुआ गैर का माहौल

इंदौर निवासी किरण, जिनकी शादी करीब 40 साल पहले भोपाल में हुई थी, ने बताया कि पहले के समय में गैर का माहौल अलग होता था . उस समय परिवार के साथ गैर देखने आना आसान नहीं था, क्योंकि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर कई तरह की चिंताएं रहती थीं . लेकिन अब हालात पूरी तरह बदल चुके हैं . उन्होंने बताया कि आज पुलिस और प्रशासन द्वारा किए गए मजबूत सुरक्षा इंतजामों के कारण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग भी बड़ी संख्या में गैर देखने आ रहे हैं .

हिमाचल से पहुंचे नवविवाहित दंपति ...

रंग पंचमी का उत्साह केवल स्थानीय लोगों तक सीमित नहीं रहा . हिमाचल प्रदेश से आए निपुण और उनकी पत्नी अदिति भी खास तौर पर इंदौर की प्रसिद्ध गैर देखने पहुंचे . निपुण ने बताया कि कुछ साल पहले वे नौकरी के सिलसिले में पीथमपुर आए थे . उस दौरान उन्होंने पहली बार इंदौर की गैर देखी थी और उस समय का अनुभव इतना अच्छा था कि वह यादगार बन गया . उन्होंने बताया कि शादी के बाद जब वे पहली बार घूमने के लिए निकले तो उन्होंने अपनी पत्नी को इंदौर की गैर के बारे में बताया . अदिति ने भी इस आयोजन को देखने की उत्सुकता जताई और दोनों हजारों किलोमीटर का सफर तय कर इंदौर पहुंच गए । उन्होंने कहा कि यहां के रंग, लोगों का दोस्ताना व्यवहार, इंदौरी खान-पान और शहर की स्वच्छता ने उन्हें बेहद प्रभावित किया है ।